गरीब लकड़हारा और कबूतर

मैक्स

एक बार एक गरीब लकड़हारा था.
वो अपनी पत्नी के साथ एक छोटी
झोपड़ी में रहता था.

एक दिन वह अपनी कुल्हाड़ी
लेकर जंगल में गया ताकि वो
एक बड़े पेड़ को काट सके.
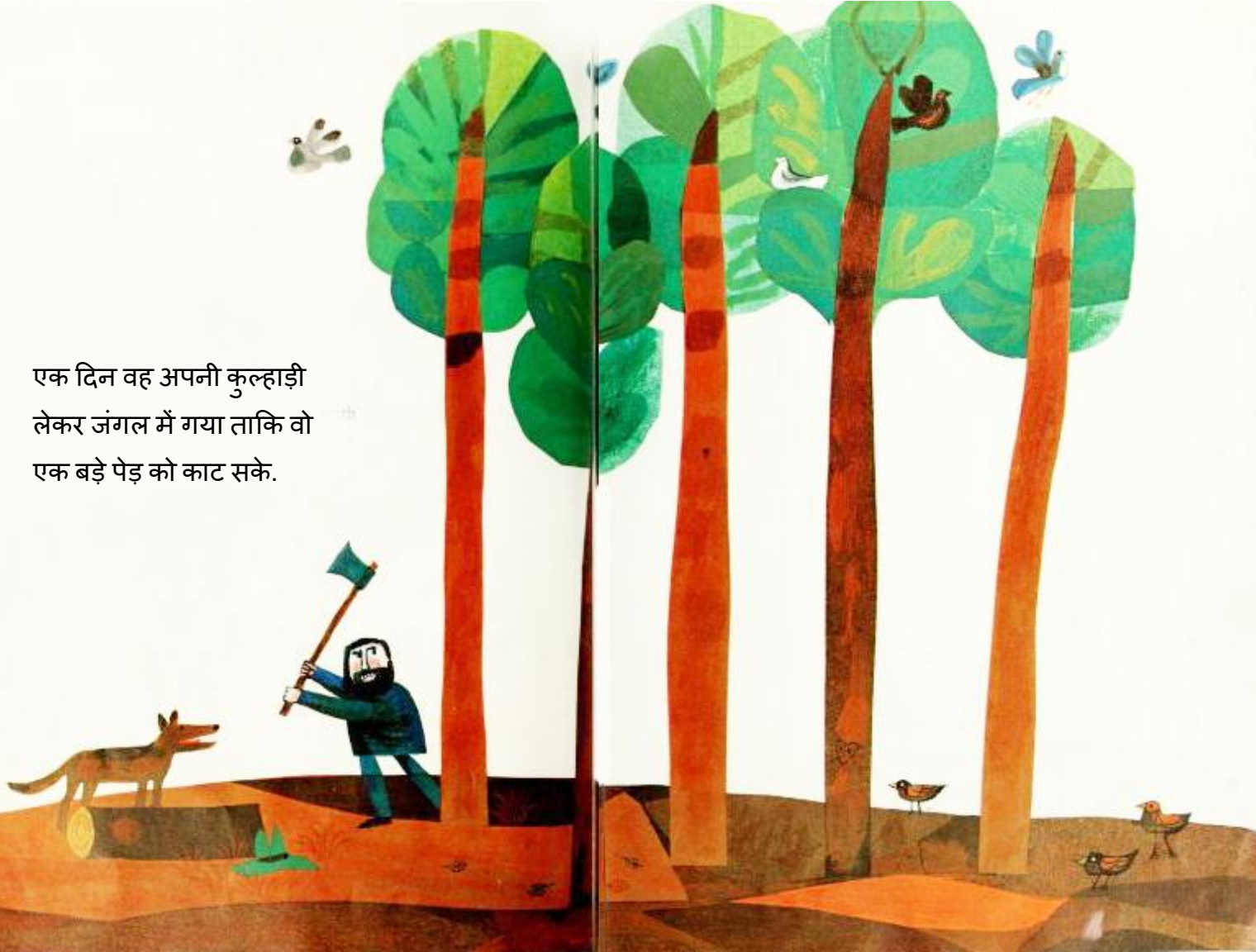
कुछ देर काम करने के बाद वो थक गया और उसे भूख लगी. वो आराम करने के लिए बैठ गया. उसे पेड़ों के ऊपर कुछ सुंदर कबूतर दिखे.

लकड़हारा भूखा था इसलिए वो बंदूक लेने घर चला गया, ताकि वो शाम के खाने के लिए कुछ कबूतर मार सके.

लेकिन वो एक भी कबूतर नहीं मार पाया. वे सभी उड़ गए. फिर एक कबूतर उसके पास वापस आया. वो लकड़हारे की बंदूक पर आकर बैठा और उसने कहा, "यदि तुम कभी भी कबूतरों को दुबारा न मारने का वादा करोगे, तो तुम जिस चीज़ की कामना करोगे वो तुम्हें मिलेगी. फिर तुम शांति और खुशी से जी सकोगे.”

गरीब लकड़हारा पहले तो बहुत हैरान हुआ लेकिन उसने कबूतर से पक्का वादा किया. लकड़हारे ने एक बेहतर घर और बहुत सारे पैसों की कामना की.

जब वह उस स्थान पर लौटा, जहाँ पहले उसकी छोटी झोपड़ी थी, तो उसने वहां एक सुंदर घर पाया. पत्नी के चेहरे पर मुस्कान थी और वो उसके स्वागत के लिए दरवाजे पर खड़ी थी.

कुछ समय तक वो खुशी से रहता रहा. लकड़हारे को अब चिंता करने की कोई ज़रुरत नहीं थी. लेकिन कुछ दिनों बाद, लकड़हारा असंतुष्ट हुआ. अब वो एक बड़ा महल, सुंदर कपड़े और घोड़ा चाहता था. फिर वो जंगल में भागकर गया. उसने कबूतर को बुलाकर उसे अपनी इच्छा बताई.

जब वह घर लौटा, तो घर की जगह पर
उसने एक अद्भुत महल खड़ा पाया. पत्नी,
सुंदर कपड़े पहने, उसका स्वागत करने के
लिए खिड़की में खड़ी थी.
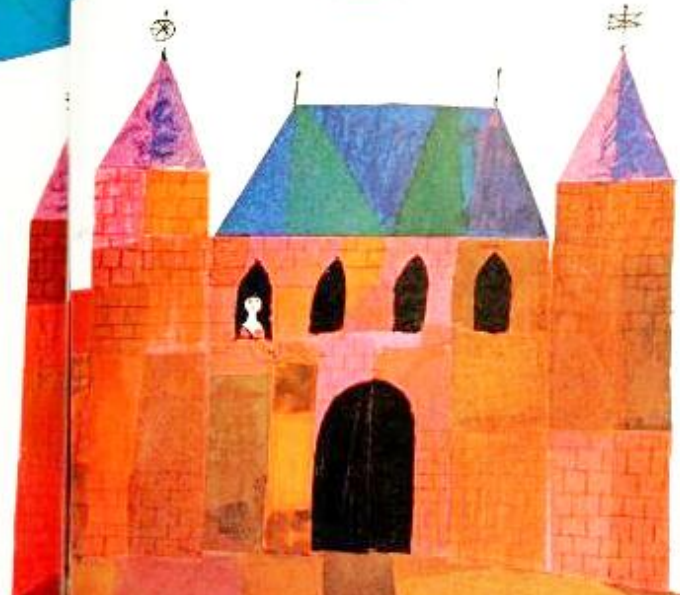
कुछ समय तक वो काफी खुश रहा. अब वो अमीर और शक्तिशाली था. पड़ोस के किसान उसके साथ बड़े सम्मान और आदर से पेश आते थे. लेकिन जल्द ही वो फिर से असंतुष्ट हुआ. वो वापिस जंगल में गया. उसने कबूतर को बुलाकर उससे खुदको राजा बनाने को कहा.
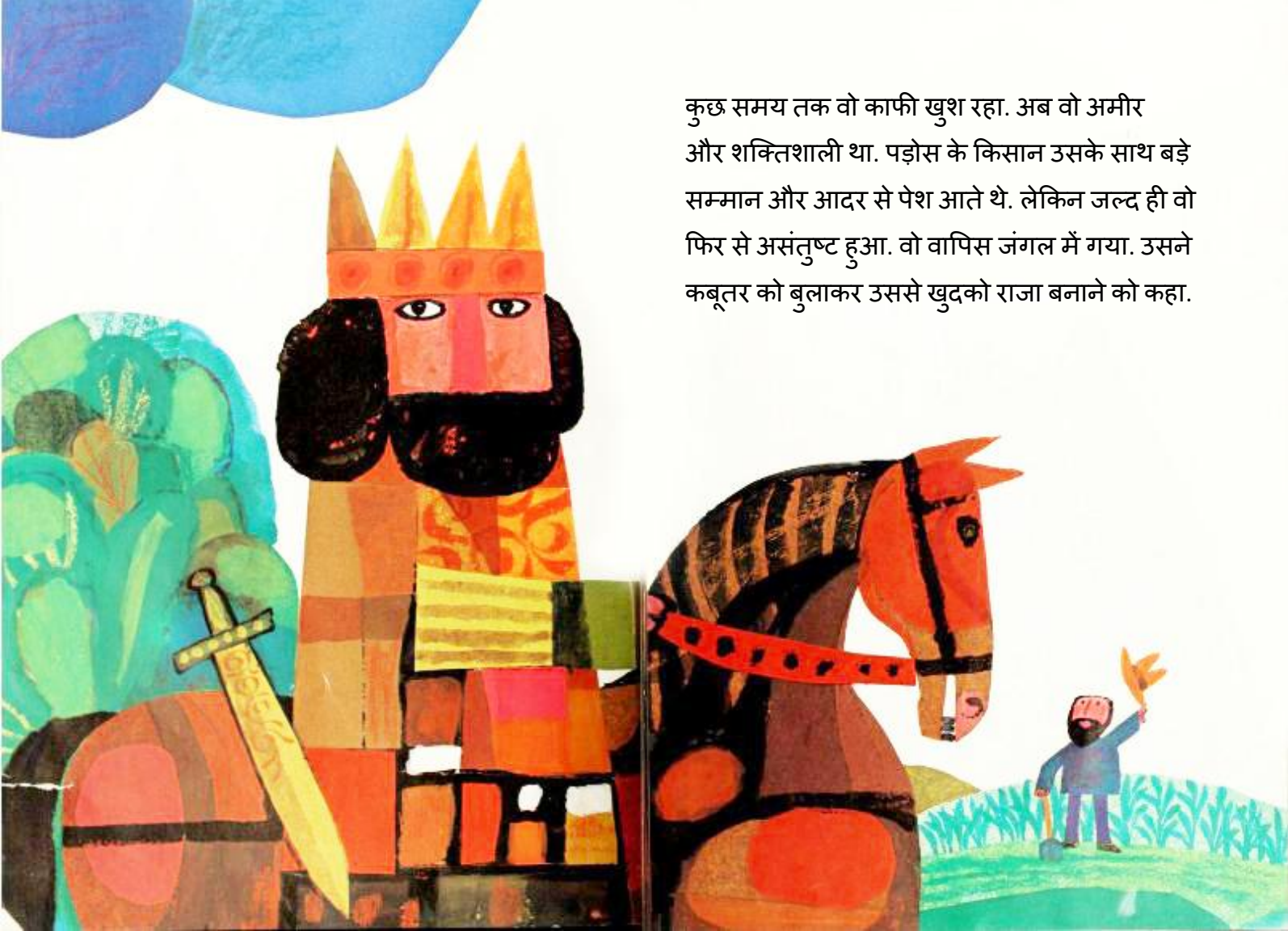
राजा बनने के बाद उसने खुदको और भी अधिक शक्तिशाली महसूस किया. उसने किसानों को ज़मीन पर भारी टैक्स देने को मजबूर किया. किसानों ने कर का भुगतान किया, क्योंकि वे राजा से बहुत डरते थे. इस तरह धीरे-धीरे करके लकड़हारा बहुत अमीर बन गया. लेकिन फिर भी वो संतुष्ट नहीं था. वह एक राजा ज़रूर था, लेकिन उसके अलावा भी आसपास कई शासक थे. अब लकड़हारा सभी राजाओं का राजा बनना चाहता था.

फिर उसने अपने किसानों में से सबसे मजबूत और ताकतवर लोगों को चुना और उनकी एक सेना बनाई.

फिर उसने अपनी सेना के साथ एक पड़ोसी राजा के महल को घेरा. वो विजय प्राप्त करने के लिए दृढ़ था. लेकिन शुरू में ही लकड़हारे की सेना को गोलियों और तीरों की तेज़ बौछार झेलनी पड़ी. लकड़हारे के सैनिकों, ने पहले कभी लड़ाई नहीं लड़ी थी. उन्हें युद्ध का कोई अनुभव नहीं था, इसलिए उन्होंने अपने हथियार नीचे फेंक दिए और अपने खेतों में वापस भाग गए.
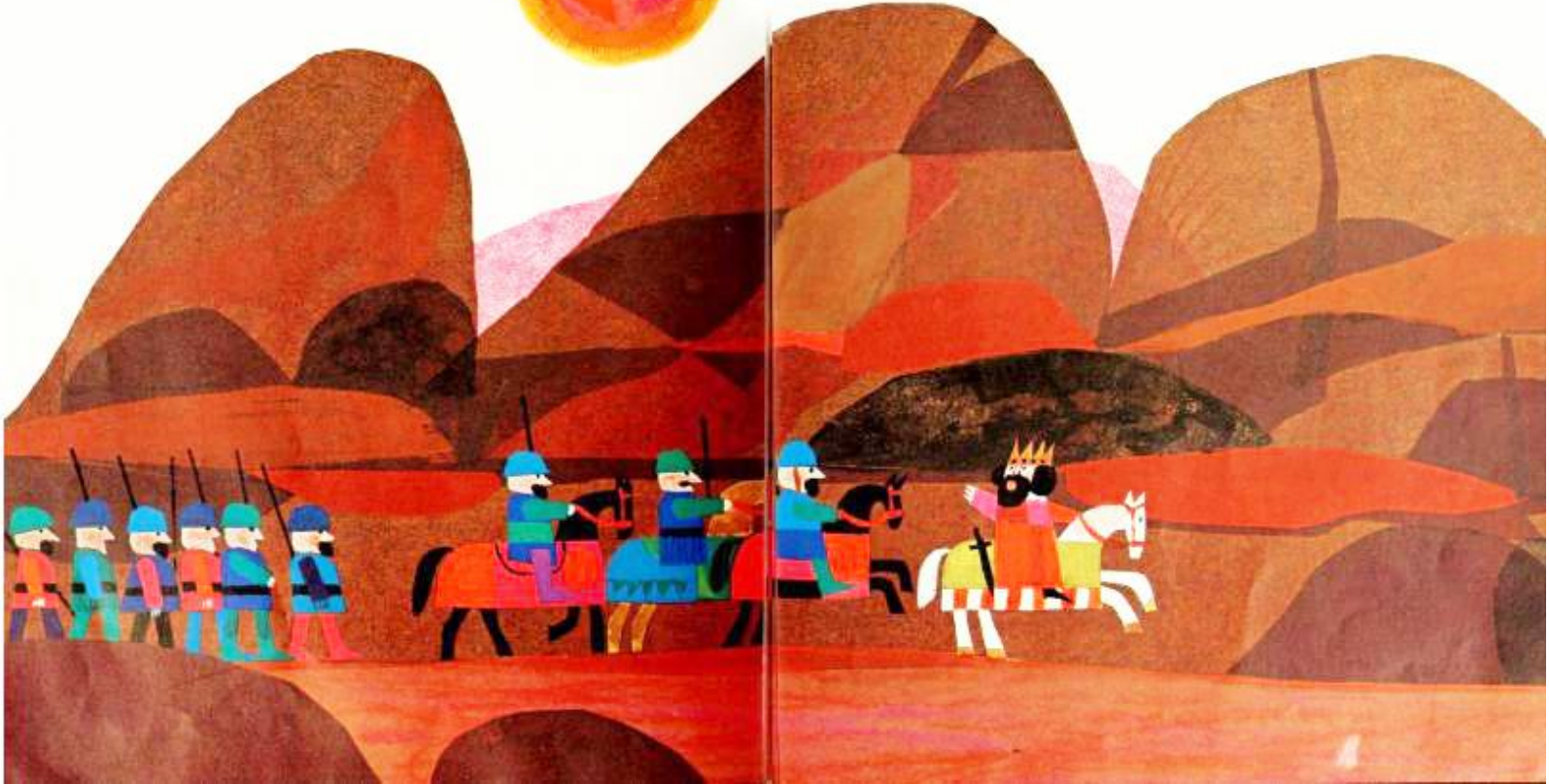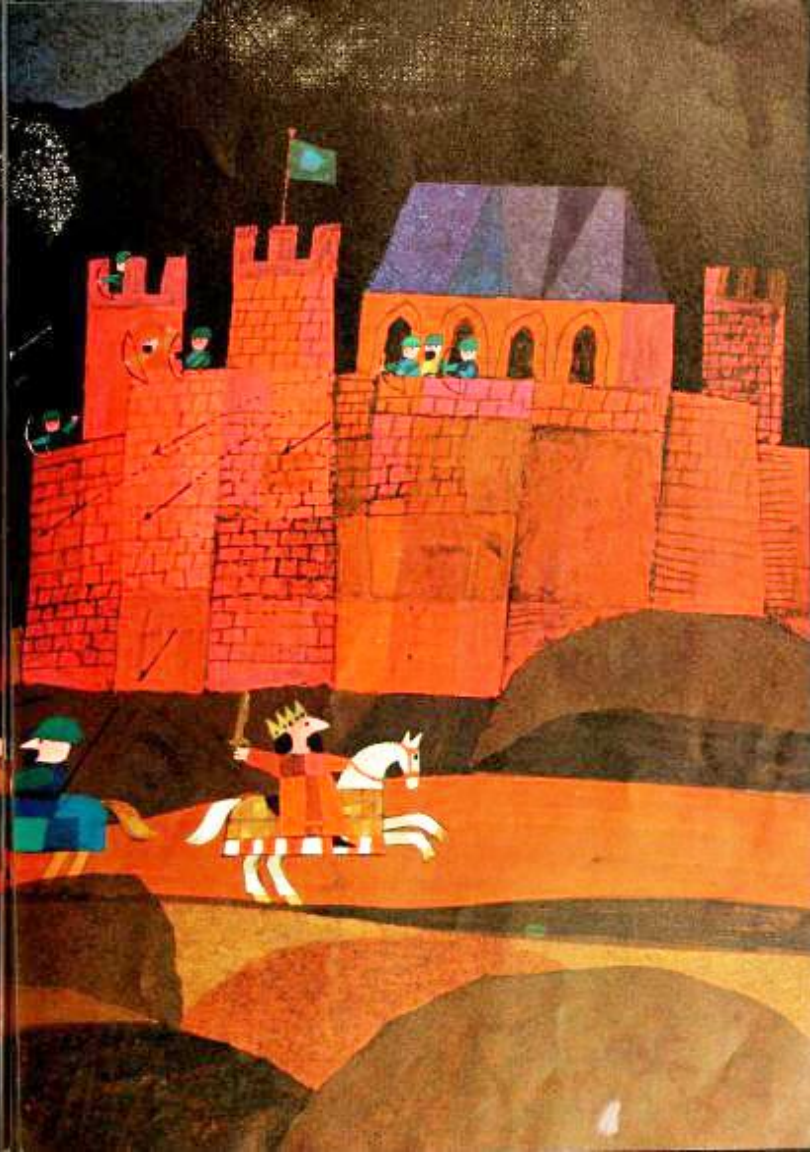
राजा को बहुत गुस्सा आया. वो अपने महल की मीनार पर चढ़ा और वहां पर उसने कबूतर को बुलाया और कहा: "मुझे एक ताकतवर सशस्त्र और महान सेना दो ताकि मैं बाकी सभी राजाओं पर राज्य कर सकूं. तभी मुझे संतुष्टि मिलेगी."

"नहीं," कबूतर ने कहा. "मैंने तुम्हें शांति और खुशी से जीने के लिए सभी ज़रूरी चीज़ें दी थीं. तुम अब जो कुछ मांग रहे हो वो तुम्हें कभी नहीं मिलेगा." यह कहकर कबूतर ऊपर की ओर उड़ा और महल की छत पर जाकर बैठ गया.
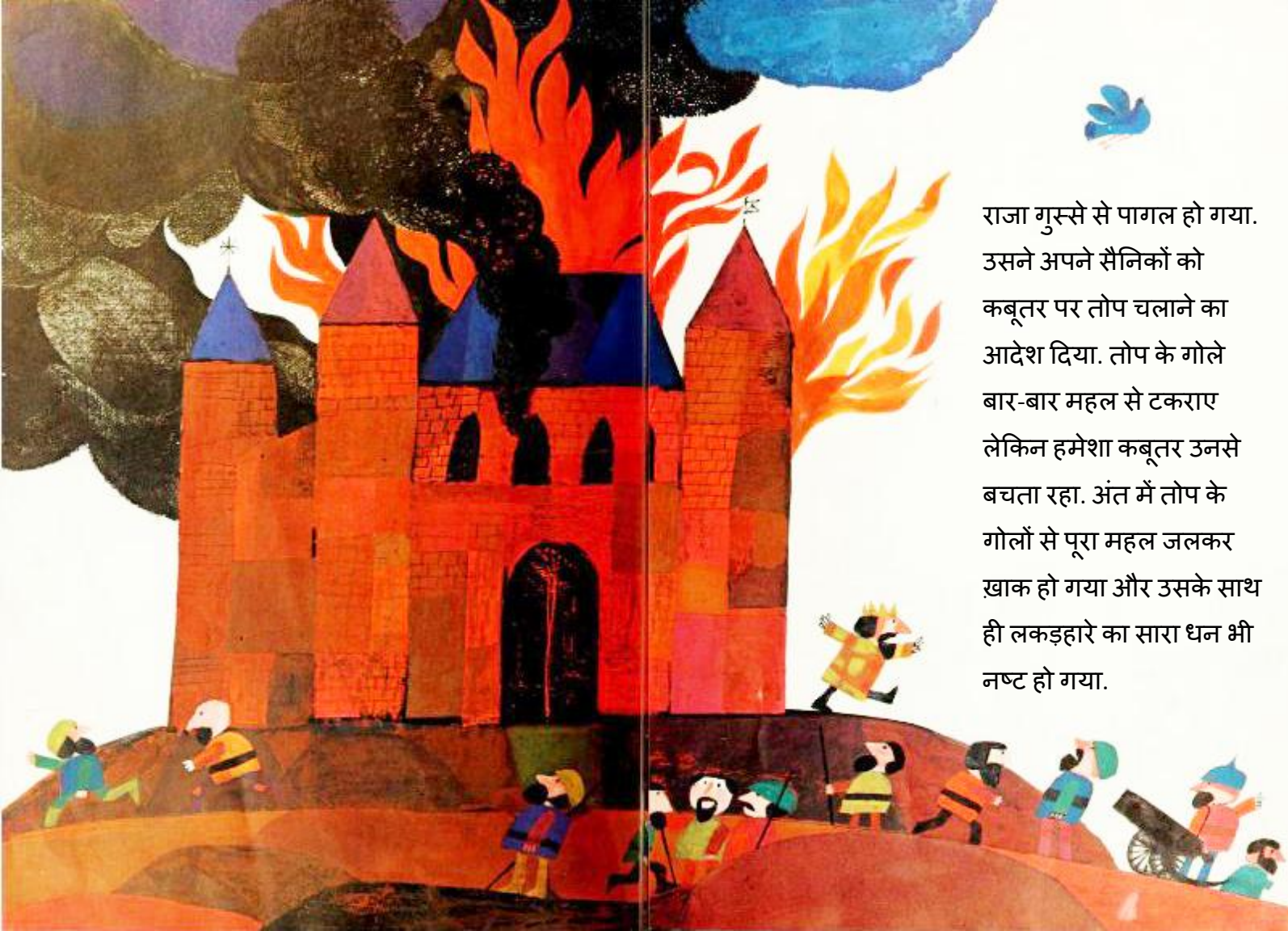
राजा गुस्से से पागल हो गया. उसने अपने सैनिकों को कबूतर पर तोप चलाने का आदेश दिया. तोप के गोले बार-बार महल से टकराए लेकिन हमेशा कबूतर उनसे बचता रहा. अंत में तोप के गोलों से पूरा महल जलकर ख़ाक हो गया और उसके साथ ही लकड़हारे का सारा धन भी नष्ट हो गया.

वो फिर से एक गरीब लकड़हारा बन गया. जहाँ कभी महल खड़ा था, वहाँ अब केवल एक छोटी सी झोपड़ी थी. हर दिन लकड़हारा उस जंगल में जाता था जहां कबूतर रहता था. लकड़हारा पेड़ों को काटकर अपनी पत्नी के लिए खाना खरीदने के लिए पर्याप्त पैसा कमाता. इसी से उसे संतुष्ट होना पड़ता था.

समाप्त